# पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
# और महिला का सम्मान

[ *हिन्दी* ]

## تكريم النبي صلى الله عليه وسلم للمرأة

[ اللغة الهندية ]


*संकलन*

अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

عطاءالرحمن ضياء الله

*संशोधन*

शफीक़ुर्रहमान ज़ियाउल्लाह मदनी

مراجعة: شفيق الرحمن ضياء الله المدني



المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

الرياض - المملكة العربية السعودية

इस्लामी आमन्त्रण एंव निर्देश कार्यालय रब्वा, रियाज़, सऊदी अरब

**1429 - 2008**

**बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम**

अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ जो अति मेहरबान और दयालु है।

# पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और महिला

## الحمد لله وكفى وسلام على عباده الذين اصطفى، أما بعد:

***हर प्रकार की प्रशंसा सर्व जगत के पालन हार अल्लाह तआला के लिए योग्य है, तथा अल्लाह की कृपा एंव शान्ति अवतरित हो अन्तिम संदेष्टा मुहम्मद पर, तथा आप के साथियों, आप की संतान और आप के मानने वालों पर।***

इस्लाम के शत्रु निरंतर यह राग अलापते रहें हैं कि इस्लाम ने नारी पर अत्याचार किया है, उसे दबा कर रखा है, उसे उसके अधिकारों से वंचित कर दिया है और उसका स्थान मात्र पुरूष के लिए नौकरानी और उसके आनन्द के साधन से बढ़ कुछ नहीं है।

किन्तु इस मिथ्या और झूठ आरोप का महल शीघ्र ही धराशाई हो जाता है जब हम इस बात से अवगत होते हैं कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किस प्रकार नारी को सम्मान प्रदान किया, उस के वैभव को उंचा किया, उस के सलाह व मश्वरे को स्वीकार किया, उस के साथ नर्मी का रवैया अपनाया, और समस्त परिस्थितियों में उस के साथ न्याय किया तथा उसे उसके सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किए जिसकी वह इस से पूर्व कल्पना भी नहीं कर सकती थी।

इस्लाम से पूर्व अरबवासी -स्वभाविक रूप से- लड़कियों को नापसंद करते थे और उन्हें लज्जा का कारण समझते थे, यहां तक कि जाहिलियत[1] -अज्ञानता- के समय काल के कुछ अरब लड़कियों को जीवित ही गाड़ देने में प्रसिद्ध थे। कुरआन करीम ने इस का चित्र इस प्रकार खींचा हैः

> **‘‘उन में से जब किसी को लड़की होने की सूचना दी जाए तो उसका चेहरा काला हो जाता है और दिल ही दिल में घुटने लगता है। इस बुरी खबर के कारण लोगों से छुपा छुपा फिरता है। सोचता है कि क्या इस को अपमानता के साथ लिए हुए ही रहे या इसे मिट्टी में दबा दे। आह! क्या ही बुरे फैसले करते हैं।’’ (सूरतुन-नह्ल16:58-59 )**

जाहिलियत के युग में जब किसी महिला का पति मर जाता था, तो उस आदमी के बेटे और रिश्तेदार उस औरत के वारिस बन जाते थे। फिर वह चाहते तो उसे अपने

---

[1] जाहिलियत का शाब्दिक अर्थ होता है अज्ञानता य ज्ञान को स्वीकार न करना। इस से अभिप्राय पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईश्दूतत्व से पूर्व का समय काल है, जिस में अरब के लोग धर्म से अनभिगता और हसब-नसब पर गर्व आदि पर स्थापित थे। इसे सामान्य अज्ञानता का काल कहा जाता है जो पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के ईश्दूतत्व से समाप्त हो चुका है।

में से किसी को बियाह देते, और अगर चाहते तो उसे विवाह से वंचित कर देते और जीवन भर उसे वैसे ही रोके रखते। इस्लाम ने इस -अत्याचार और कुप्रथा- को समाप्त कर के ऐसे न्याय पूर्ण नियम और दस्तूर बनाए जो बराबरी के साथ स्त्री एंव पूरूष दोनों के अधिकारों की ज़मानत हैं।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सूचना दी है कि मानवता के अन्दर स्त्री, पूरूष के बराबर है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**"महिलाएं, पूरूषों के समान हैं।"** (इसे अहमद, अबू दाउद और त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है।)

अतः इस्लाम में पुरूष लिंग और स्त्री लिंग के बीच कोई मतभेद नहीं है जैसाकि इस्लाम के शत्रु कल्पना करते हैं, बल्कि दोनों लिंगों के बीच भाईचारा और पुराव है।

कुरआन करीम ने ईमान -विश्वास-, कार्य और उसके प्रतिफल -बदले- में पुरूष एंव स्त्री के बीच बराबरी को प्रमाणित किया है। अल्लाह तआला का फर्मान हैः

**"निःसन्देह मुसलमान मर्द और मुसलमान महिलाएं, मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, आज्ञाकारी मर्द और आज्ञाकारी औरतें, सत्यवादी मर्द और सत्यवादी औरतें, धैर्य करने वाले मर्द और धैर्य करने वाली औरतें, विनम्र मर्द और विनम्र औरतें, दान करने वाले मर्द और दान करने वाली औरतें, रोज़े रखने वाले मर्द और रोज़े रखने वाली औरतें, अपनी शरमगाह (सतीत्व) की सुरक्षा करने वाले मर्द और सुरक्षा करने वाली औरतें, अधिक सें अधिक अल्लाह का ज़िक्र करने वाले मर्द और ज़िक्र करने वाली औरतें -इन सब- के लिए अल्लाह तआला ने क्षमा -बख्शिश- और बड़ा पुण्य तैयार कर रखा है।"** **(सूरतुल अहज़ाब33:35)**

तथा अल्लाह तआला ने फरमायाः

**"जिस ने पाप किया है तो उसे उसके पाप के समान ही बदला मिले गा। और जिस ने नेकी की है, चाहे वो पुरूष हो या स्त्री और वो ईमान वाला हो तो ये लोग स्वर्ग में जाएं गे और वहां असंख्य रोज़ी पाएं गे।"** **(सूरतुल-मोमिन40:40)**

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्त्री वर्ग से अपनी महब्बत का उल्लेख करते हुए फरमायाः

**"तुम्हारी दुनिया के उपकरणों में से मेरे लिऐ महिलाएं और सुगन्ध प्रिय कर दिए गए हैं। और मेरी आंखों की ठन्ढक नमाज़ में बना दी गई है।"** (इसे अहमद और नसाई ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम महिलाओं से महब्बत करते थे तो फिर आप उन पर अत्या चार कैसे कर सकते हैं? कैसे उनका अपमान कर सकते हैं? तथा उन्हें तुच्छ कैसे समझें गे?

जिस प्रकार अल्लाह तआला ने लड़कियों को नापसंद करने और उन्हें जीवित गाड़ देने की कुप्रथा को मिटा दिया, पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने भी उस बुरी आदत

को नष्ट कर दिया, और लड़कियों का पालन पोषण करने और उन के साथ भलाई करने की रूचि दिलाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''जिस ने दो लड़कियों का पालन-पोषण और देख भाल किया यहां तक कि वो बालिग हो गईं, तो क़ियामत के दिन वो मेरे साथ इस प्रकार आए गा - फिर आप ने अपनी दो अंगुलियों को मिलाकर दिखाया-''** (मुस्लिम)

इस हदीस में इस बात की ओर संकेत है कि लड़कियों की देख भाल और सुरक्षा करने से, यहां तक कि वो प्रौढ़ता और बुलूगत की उमर तक पहुंच जाएं, आदमी को उंचा पद और पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निकटता प्राप्त होगी।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''जिस के पास तीन लड़कियां, या तीन बहनें, या दो लड़कियां या दो बहनें हों और वो उनके साथ उत्तम रहन सहन करे, और उनके बारे में अल्लाह से डरता रहे, तो उस के लिए स्वर्ग है।''** (इसे त्रिमिज़ी ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स्त्री को शिक्षा देने के बड़े इच्छुक थे, आप ने उन के लिए एक दिन निश्चित कर दिया था जिस में वो एकत्र होती थीं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके पास आते और जो कुछ अल्लाह ने आप को धर्म का ज्ञान प्रदान किया था उस की उन्हें शिक्षा देते थे।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्त्री को घर में बन्दी बनाकर नहीं रखा है जैसाकि कुछ लोगों की सोच है, बल्कि उस के लिए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति, रिश्ते दारों से मिलने और बीमारों की तीमार दारी करने के लिए घर से बाहर निकलना वैद्ध किया है। तथा अपने शरई -धार्मिक- पर्दा और हया -सतीत्व- की रक्षा करते हुए उस के लिए बाज़ार में खरीद व फरोख्त करना जाइज़ ठहराया है। इसी प्रकार उस के लिए मस्जिदों में जाना वैद्ध घोषित किया है और उसे मस्जिद जाने से रोकने से रोका है। चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''अपनी महिलाओं को मस्जिदों से न रोको।''** (इसे अहमद और अबू दाउद ने रिवायत किया है।)

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने महिलाओं के साथ भलाई करने पर बल दिया है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''महिलाओं के साथ भलाई करने की मेरी वसीयत का ध्यान रखो।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

इस कथन का तक़ाज़ा यह है कि उनके साथ बढ़िया रहन-सहन रखा जाए, उनके अधिकारों का सम्मान किया जाए, उनकी भावनाओं का ध्यान रखा जाए और उन्हें किसी प्रकार का कष्ट न पहुंचाया जाए।

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पतियों को अपनी पत्नियों पर खर्च करने की रूचि दिलाई है, चुनांचे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''तुम अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए जो भी खर्च करो गे, उस पर तुम्हें अज्र व सवाब (पुण्य) मिले गा, यहां तक कि उस पर भी जो तुम अपनी बीवी को खिलाते पिलाते हो।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

बल्कि पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने परिवार पर खर्च करना आदमी का सर्व श्रेष्ठ खर्च घोषित किया है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''सर्व श्रेष्ठ दीनार वह है जो आदमी अपने बाल-बच्चों पर खर्च करता है।''** (मुस्लिम)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''आदमी अगर अपनी बीवी को कुंवे से पानी पिला देता है, तो उसे उस पर अज्र व सवाब (पुण्य) दिया जाता है।''** (इसे अहमद ने रिवायत किया है और अलबानी ने सहीह कहा है।)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की इस हदीस को इरबाज़ बिन सारिया ने सुना तो वो भाग कर पानी लाने के लिए गए, फिर अपनी बीवी के पास आए और उसे पानी पिलाया, और अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से जो बात सुनी थी उस को बताया।

इस प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने साथियों को महिलाओं के साथ अच्छे रहन-सहन, उनके साथ हमदर्दी करने, उन के साथ शफक़त व मेहरबानी का बर्ताव करने, उन्हे नाना प्रकार की भलाईयां पहुंचाने और परम्परा के अनुसार उन पर खर्च करने की शिक्षा दी।

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह स्पष्ट कर दिया कि महिलाओं के साथ अच्छा रहन-सहन आदमी के आत्मा की शराफत और उसके स्वभाव की उदारता का प्रमाण है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''तुम में से सर्व श्रेष्ठ आदमी वह है जो अपनी औरतों के लिए सब से अच्छा हो।''** (अहमद, त्रिमिज़ी।)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आदमी को अपनी बीवी से द्वेष -बुग्ज़- रखने से रोका है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः

**''कोई मोमिन पुरूष किसी मोमिन स्त्री से कपट (द्वेष) न रखे, यदि उसका कोई स्वभाव उसे नापसन्द हो, तो उसके किसी दूसरे स्वभाव से वह प्रसन्न हो जायेगा।''** (मुस्लिम )

इस प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्दों को इस बात का आदेश दिया है कि औरत के अन्दर मौजूद अच्छे गुणों और सराहनीय स्वभाओं को तलाश करें, औ त्रुटियों तथा अस्वीकारनीय पहलुओं से अपेक्षा करें। क्योंकि अस्वीकारनीय स्वभाव को खोजना और देर तक उस के पीछे पड़े रहना पति-पत्नि के बीच घृणा और द्वेष को जन्म देता है।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों को मारने-पीटने से रोका है, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फर्मान है:

**''अल्लाह की बन्दियों को न मारो।''** (अबू दाउद)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों को कष्ट पहुंचाने वालों को धमकी दी है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

> **''ऐ अल्लाह मैं दो कमज़ोर वर्ग : यतीम -अनाथ- और स्त्री के अधिकार के अनुपालन को गुनाह और आपत्ति जनक घोषित करता हूं।** (अहमद, इब्ने माजा )

इसका अभिप्राय यह है कि जो इन दोनों वर्गों पर अत्याचार करे गा, अल्लाह तआला उसे क्षमा नहीं करे गा, बल्कि वह दुनिया व आखिरत (लोक एंव प्रलोक) में गुनाह और यातना का पात्र है।

तथा पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्दों को बीवियों के भेदों को प्रकाशित करने से रोका है, इसी प्रकार बीवियों को भी अपने पतियों के भेदों को खोलने से मनाही की है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया:

> **''अल्लाह के निकट क़ियामत के दिन सब से बुरा पद वाला वह व्यक्ति है जो अपनी पत्नि से सहवास करता है और वह उस से सहवास करती है, फिर वह उस के भेद को प्रकाशित कर देता है।''** (मुस्लिम)

पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्त्री का सम्मान करने का एक रूप यह भी है कि आप ने पतियों को पत्नियों के बारे में बदगुमानी करने और उन की त्रुटियों को टटोलने से रोका है। जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फरमाते हैं:

> **''पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मर्द को इस बात से रोका है कि वह रात के समय अचानक अपनी बीवी के पास आ धमके; ताकि वह उनकी चौकीदारी करे, या उनकी त्रुटियों को टटोले।''** (बुखारी एंव मुस्लिम)

जहां तक पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अपनी बीवियों के साथ बर्ताव का संबंध है, तो वह अतयंत नर्मी और विनम्रता का बर्ताव था। अस्वद से वर्णित है वह कहते हैं : मैं ने आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा: अल्लाह के पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने परिवार में क्या किया करते थे? उन्हों ने उत्तर दिया: अपने परिवार की सेवा में व्यस्त रहते थे, जब नमाज़ का समय हो जाता, तो नमाज़ के लिए उठ कर चले जाते थे। (बुखारी)

तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपनी बीवियों की प्रसन्नता ढूंढ़ते थे, और उन से मीठी-मीठी बातों और मनोहर वार्तालाप से सम्बोधित होते थे।

इस का एक उदाहरण आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा से यह कहना है:

> **''मैं तुम्हारी अप्रसन्नता और प्रसन्नता को पहचानता हूं।''** उन्हों ने पूछा: ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! आप इसे कैसे पहचानते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: **''जब तुम प्रसन्न होती हो तो कहती हो: क्यों नहीं, मुहम्मद के पालनहार की क़सम, और जब तुम नाराज़ होती हो तो कहती हो: नहीं, इब्राहीम के पालनहार की क़सम।''** तो उन्हों ने कहा: हां, अल्लाह की क़सम ऐ अल्लाह के पैग़म्बर! मैं केवल आप का नाम छोड़ती हूं। (बुखारी एंव मुस्लिम)

अर्थात दिल में आप की महब्बत बाक़ी रहती है।

इसी प्रकार पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी पत्नि खदीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को उनकी मृत्यु के पश्चात भी नहीं भुलाया। अनस रज़ियल्लाहु कहते हैं: जब पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास कोई तोहफा आता तो आप फरमाते:

> **''इसे फलां औरत को दे आओ, क्योंकि वह खदीजा की सहेली थी।''** (इसे तब्रानी ने रिवायत किया है)

यह है पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सम्मान महिलाओ के प्रति। तो ऐ महिला की स्वतंत्रता का राग अलापने वालो, तुम्हारा इस प्रकार के सम्मान से कितना संबंध है !

सर्व जगत के पालनहार से हमारी प्रार्थना है कि इस लेख को महिलाओं पर पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महान उपकार, दया, तथा उनके प्रति आप के अनुपम व्यवहार, न्याय और सम्मान को स्पष्ट करने और मानवता को इनसे अवगत कराने में लाभदायक बनाये।

**(अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह)***

*atazia75@gmail.com**